मंथन

स्टाफ क्लब, आई. एच. बी. टी. पालमपुर

वर्ष 2 अंक 1 अगस्त 2006

मंथन

स्टाफ क्लब, आई. एच. बी. टी. पालमपुर
वर्ष 2 अंक 1 अगस्त 2006

आमुख

मंथन आपके स्टाफ क्लब की पत्रिका है, इसका पांचवां अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है। आपके अन्दर विद्यमान वे प्रतिभायें, जिन्हें आप बोलकर या अन्य किसी रूप में व्यक्त नहीं कर सकते आप उन्हें मंथन के माध्यम से लघु लेख व कथा, कलाकृति, रेखाचित्र, कविता व अन्य किसी भी रूप में व्यक्त कर सकते हैं तथा छिपी प्रतिभा को निखार सकते हैं।

"मंथन की भावना है—भावनाओं का मंथन।"

स्टाफ क्लब के सभी सदस्यों एवं उनके परिजनों से निवेदन है कि वे मंथन के आगामी अंकों के लिए प्रविष्टियां देने की कृपा करें ताकि मंथन का अगला अंक समय से निकाला जा सके। भाषा हिन्दी या अंग्रेजी हो सकती है।

इस अंक में प्रविष्टियां देने वालों व सहयोग प्रदान करने वालों का स्टाफ क्लब सदैव आभारी रहेगा।

विषय सूची

इस अंक में

लेख	लेखक	पृष्ठ
आजादी का पर्व	मुखत्यार सिंह	1
What surprises	**N. K. Kalia**	**2**
Drawing	**Neha Singh**	**3**
धर्म एवं समाज	कविता सिन्हा	4
हिम्मत	पी.के. नागर	6
बहुत दूर	हरमेश	7
IT गीता	**Jasbeer Singh**	**8**
Who am I ?	**Abhishek Sharma**	**9**
मेरे सनम्	अब्दुल रहमान	10
जाति–भेद	निखिल सूद	11
स्त्रीत्व	संगीता सिंह	12
Childern Section	*********	13
कलाकृतियां	**Ankita**	**14**
कलाकृतियां	**Utkarsh Singh**	**15**
कलाकृतियां	**Niharika Srivastava**	**16**
कलाकृतियां	**Pushpinder Kaur**	**17**
कलाकृतियां	**Ankita Choudhary**	**18**
कलाकृतियां	**Ankit & Deeksha**	**19**
कलाकृतियां	**Meghana Pati**	**20**

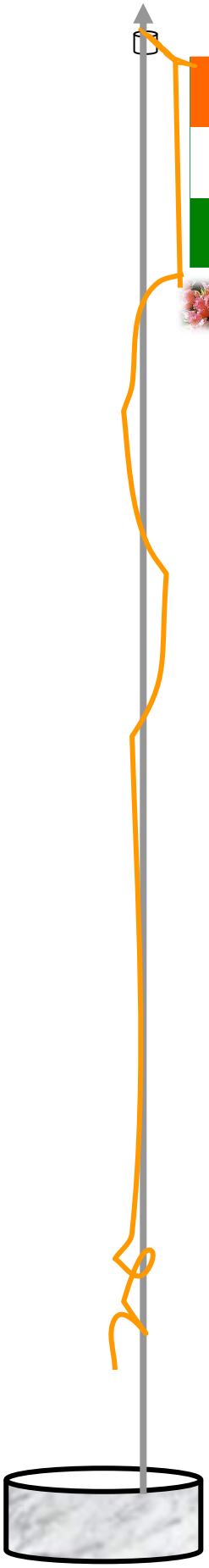

“ आजादी का पर्व ”

आ गया पर्व आजादी का,
उज्जवल हो गई सारी सृष्टि,
वर्षा की निर्मल फुहारों से।
तुम भी अपना मन
स्वाभिमान से भर लो,
आजादी की सुनहरी यादों से।

प्रतिज्ञा ले लो इस पर्व पर,
राष्ट्र को उन्नत और
अग्रणी शक्ति बनाने का।
ज्ञानी, विज्ञानी और
जनमानस हैं रखते क्षमता
असम्भव को भी सम्भव बनाने का।

नहीं करो तुम अतिक्रमण
प्रकृति की धरोहरों का।
जल, धरा और नभ को
व्यर्थ में दूषित मत करो।
होंगें सब सुरक्षित और स्वस्थ
इन्हीं की रक्षा और सुरक्षा से।

रहे सुरक्षित आजादी
बन जाओ सब राष्ट्रवादी।
प्रतिकार करो तुम हिंसा का,
वादों (Isms), और विवादों का।
आजादी के तुम्हीं हो रक्षक
व्यर्थ न करना वीरों के बलिदानों को।

आओ जय घोष करें सब मिलकर,
प्राणों से भी प्यारी भारत माता का।

मुखत्यार सिंह

What surprises.....?

Somebody once asked God, “What surprises you the most about mankind?”

God replied, “They lose their health to make money and then, lose their money to restore their health. By thinking anxiously about the future, they forget the present…..such that they live neither for the present nor for the future……

They live as if they will never die and they die, as if they have never lived……..

***** In a mail received by**
N. K. Kalia

NEHA SINGH

धर्म एवं समाज

जब व्यक्ति कोई अवसादमय दृश्य देखता है तो स्वाभाविक रूप से एक दीर्घ निःश्वास ले वह पूछता है "संसार जा कहॉ रहा है" ? "क्या संसार अधार्मिक हो चला है" यदि आज की सामाजिक अवस्था को देखें तो हम पाते हैं कि हर जगह अमानवीय और अविश्वसनीय बर्बरता का प्रदर्शन हो रहा है। हाल में ही घटित बॉम्बे लोकल ट्रेन के अंदर बम ब्लास्ट, इंग्लैंड में ट्रेन बम ब्लास्ट, अमेरिका के वर्ल्ड ट्रेड सेंटर के विनाश के साथ–साथ हजारों मनुष्यों की दर्दनाक मौत और न जाने कितनी ऐसी घटनाएं जो अमानवीय बर्बरता को ही दर्शाती हैं, अब एक आम बात हो गयी है। धर्म के नाम पर हजारों मनुष्यों को मौत के घाट उतार दिया जाता है। यदि चीजें ऐसी ही होती रहीं तो मानवता के लिए बाकी क्या रह जायेगा ? वस्तुतः वर्तमान के प्रति सतत् असन्तोष की भावना मानव स्वभाव की विशेषता है। मनुष्य को लगता है कि संसार वास्तव में अधार्मिक हो गया है और उसकी दशा दिन–ब–दिन बद्तर होती जा रही है।

प्रत्येक धर्म का यही दावा रहा है कि मानव–समाज के हृदय में उसका ही सर्वोपरि प्रभुत्व है। साम्प्रदायिकता का जहर फैलाने वाले क्या धार्मिक हैं ? या वे लोग अधार्मिक थे जो मार डाले गए। धर्म का यथार्थ रूप मानवतावादी मूल्यों से जुड़ा होता है, किंतु उसकी विकृति उसे धर्मांधता की ओर ले जाती है। धर्म में जब धर्मांधता का समावेश हो जाता है तब धर्म विकृत एंव रूढ़िग्रस्त हो जाता है और उसकी गत्यात्मकता समाप्त हो जाती है। ऐसे में धर्म सामाजिक सामंजस्य को बढ़ावा न देकर सामाजिक संकट को उत्पन्न करता है।

धर्म की सामाजिक भूमिका है इस भूमिका के निर्वाह के क्रम में ही धर्म सामाजिक परिवर्तन में योगदान देता है। एक संस्था के रूप में धर्म वस्तुतः मनुष्य के सामाजिकरण की प्रक्रिया को निर्धारित करता है। सामाजिकरण वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से व्यक्ति सम्बंधों एवं क्रियाकलापों को ग्रहण कर समाज के साथ सामंजस्य स्थापित करता है। इस स्थिति के निमार्ण में धर्म यदि योगदान देता है तो धर्म के ऐसे रूप को जीवन में आर्दश प्रस्तुत करने वाला रूप कहा जाता है। धर्म अपनी सामाजिक

भूमिका के निर्वहन के क्रम में व्यक्ति एवं समाज को प्रगति के पथ पर अग्रसर करता है। धर्म का इतिहास इस तथ्य का साक्षी है कि धर्म प्रगति, सुधार एवं क्रांति का भी

साधन सिद्ध हुआ है। धर्म जब सृजनशील धार्मिक–सामाजिक चेतना की जागृति में योगदान देता है तब धर्म की भूमिका भावात्मक एवं व्यावहारिक रूप में स्वीकारी जाती है। ऐसी भूमिका से समाज की प्रगति हो पाती है।

जिस प्रकार एक वृक्ष का निर्णय उसके फलों से किया जाता है उसी प्रकार धार्मिक, जीवन धार्मिक अनुष्ठानों की कठोर दिनचर्या के पालन से नहीं अपितु चरित्र, हृदय की पवित्रता व मानवता की सेवा से चरितार्थ होता है। जो लोग यह स्वीकार करते हैं कि संसार अधार्मिक होता जा रहा है वह यह भूल गए हैं कि समुद्र में ज्वार आता–जाता है, चँन्द्रमा की कलाएं घटती व बढ़ती रहती हैं। जीवन में भी धर्म हमें कभी उत्थान तो कभी पतन की ओर ले जाता प्रतीत होता है। मानवता को लम्बा सफर तय करना है। धर्म एवं समाज गतिमान हैं। वह निष्क्रियता का शिकार नहीं हुआ है। गति ही जीवन है और स्थैर्य ही मृत्यु। प्राणवन्त गतिशील जगत में परिवर्तन अवश्यम्भावी है। धर्म अपनी सामाजिक भूमिका के निर्वहन के क्रम में व्यक्ति एवं समाज को प्रगति के पथ पर अग्रसर करता है। भले ही प्रगति स्पष्ट रूप से परिलक्षित न हो और ऐसा प्रतीत हो रहा हो कि धर्म का धर्मांध रूप समाज को विघटन की ओर ले जा रहा है पर मानवता अपने लक्ष्य की ओर ही अग्रसर है। इसे अस्वीकार करना ही परम सत् के अस्तित्व को नकारना है और यही मानों अधार्मिक अथवा धर्महीनता का प्रतीक है। सफलताओं तथा विफलताओं के बीच पल्लवित होते हुए सामाजिक तथा धर्मनिष्ठ परिवर्तन अवश्यम्भावी है।

कविता सिन्हा

हिम्मत

हिम्मत के साथ सच को उठाने की बात है
दरपन फरेबियों को, दिखाने की बात है !

मैं मानता हूँ सूरज को कोहरे ने ढक लिया
लेकिन इस ढक्कन को हटाने की बात है !

देखा नहीं किसी ने, कहाँ है क्षितिज का छोर
बस कल्पना में उड़ने उड़ाने की बात है !

कराता है कोई हमसे जो, करते हैं हम वही
कर्ता हैं हम, अहम् में मिटाने की बात है !

पी.के. नागर

बहुत दूर

"दूसरों की राह में
कांटे बिछाने वाले
क्या तुमने कभी सोचा है
कि तुझे भी जाना है
इस राह में बहुत दूर "!

"तुमसे भी पहले
तुझसे भी ज्यादा
वफादार इन्सान
इसी राह से
गुजरे हैं अब तक
जिन्हें फूल तो मिले नहीं
तुम्हारी तरह और कांटे
बिछाते चले गए हैं"!!

"हां शायद तुम से भी अलग लोग !
गुजरे हैं इसी राह से
जो तुझ जैसों के लिए बिछाए
कांटों को हटा
कुछ फूल बिखरा गए हैं "!!

"पर तेरी राह में यह फूल !
कभी नहीं आएंगे
तू कांटे बिखराने वाला है
यही तेरी राह में आएंगे
दूसरों की राह में
कांटे बिछाने वाले
क्या तुमने कभी सोचा है
कि तुझे भी जाना है इसी राह में
बहुत दूर "!!

हरमेश

∫∫ **IT** गीता सारांश ∫∫

Code तो महामाया है ।
आज तुम **Coding** करते हो,
कल कोई और करेगा ।
परसों कोई और करेगा ।

तुमने ऐसा क्या सीखा था,
जो तुम्हें इस **Project** में काम आ रहा है ?
तुम ऐसा क्या सीख रहे हो,
जो तुम्हें अगले **Project** में काम आयेगा ?

Bug ही जीवन का है सत्य ।
आज भी है, और हमेशा रहेगा ।
तुम सोचते हो कि तुमने **Bug**
ठीक कर दिया, गलत सोचते हो ।

वो निरंतर है ।
नये–नये रूप में तुम्हारे,
सामने आता रहता है ।
इसे पहचानो पार्थ ।

इसलिये **Code** करते जाओ,
Bug की चिंता मत करो,
वो अपने आप तुम्हें,
मिलते रहेंगे ।

Hurry Home (हरि ॐ)

Jasbeer Singh

Who am I ?.....

I gaze at the sky,
And, a thought erupts,
Who am I ?
Whispers a photon "I left that star eons ago *n* flied many mile",
A thought erupts; Who's this stranger?
And, *Who Am I ?.....*

A call beckons "Thou blossomed in such a star ages ago",
***O*! Thee thermonuclear kin and baryonic cradle,**
Gushes the zephyr "Me, a dance of that twig and entropy's rile",
A thought erupts; Who's this stranger?
And *Who am I ?.....*

Tells a flash "Thee descended with such a twig ages ago",
***O*! evolution's gossamer ties thee with thou vegetative friend,**
A thought erupts; *Did I fathom the cosmic swan song ?*

A call beckons "Yep! But when "*I*" and "*Thou*" merge into "*One*",
O! Is tis my lyric?
And "*I*" am but "*One*".

Abhishek Sharma

"मेरे सनम्"

इस नये साल में आ भी जाओ सनम्
मैं हमेशा तुझे याद करता रहा।

इक तसल्ली हुई तेरे आने के बाद
दिल में न जाने और कितने अरमान हैं।

मेरी गुस्ताखियां माफ करना जरा
रूठ कर दूर मुझसे न जाना सनम्।

जब निगाहों से तेरी निगाहें मिलीं
एक तूफान दिल में उठने लगा।

जब तेरा प्यार पाया तो मैं जाना सनम्
अब मुझे छोड कर तुम न जाना सनम्।

अब्दुल रहमान

जाति–भेद ।

मनुष्य एक, मनुष्य का भगवान एक,
परन्तु मनुष्य में मत–भेद हैं अनेक ।
मनुष्य ने बनाई है अलग–अलग जाति,
जिनके भेदों को खून की नदियॉ भी नहीं मिटा पातीं ।।

जाति–भेद में कई हैं मरे,
इसका कारण है विद्वान की सोच से भी परे ।
कोई इसे बढ़ाता तो कोई है घटाता,
परन्तु इसका अन्त कोई न कर पाता ।।

इसमें भाई–भाई का दुश्मन बन जाता,
एक जाति का आदमी दूसरे को नीचा दिखाता ।
जो निम्न जाति से हैं अपने पैदाइश पर है पछताता,
उसके इस दुःख में उसका साथ देता सिर्फ विधाता ।।

जाति–भेद बने उन्नति में रूकावट,
सफल देश वही जो इन्हें मिटावत ।
समझना है यह कि मनुष्य एक है जाति,
तो फिर एक–दूसरे को क्यों है सताता ।।

आओ करें ये निश्चय आज,
मिल बॉट के खाए अनाज ।
ये भेद–भाव भूलाएँ,
एक सम्पूर्ण भारत बनाएँ।।

निखिल सूद

स्त्रीत्व

धुएँ की लकीर सी
बनती बिगडती
तुम्हारी आकृति
कौन हो, तुम ?

कहीं पली कहीं बढ़ी
बाबुल के आँगन में खेली
दुल्हन बन डोली चढ़ी
ऑखों में शर्म
चेहरे पर दया का पर्दा लिए
कौन हो, तुम ?

हृदय में प्यार का सागर लिए
आँचल में मातृत्व समेटे
प्रेम गंगा से नव जीवन को सिंचती
पनपते जीवन अंकुर तुमसे
कौन हो, तुम ?

कहीं प्यार से सँवर गई
कहीं धोखे से बिखर गई
पानी सी रिश्तों के हर रंग में ढल गईं
मुरत समर्पण की
कौन हो, तुम ?

संगीता सिंह

Children Section

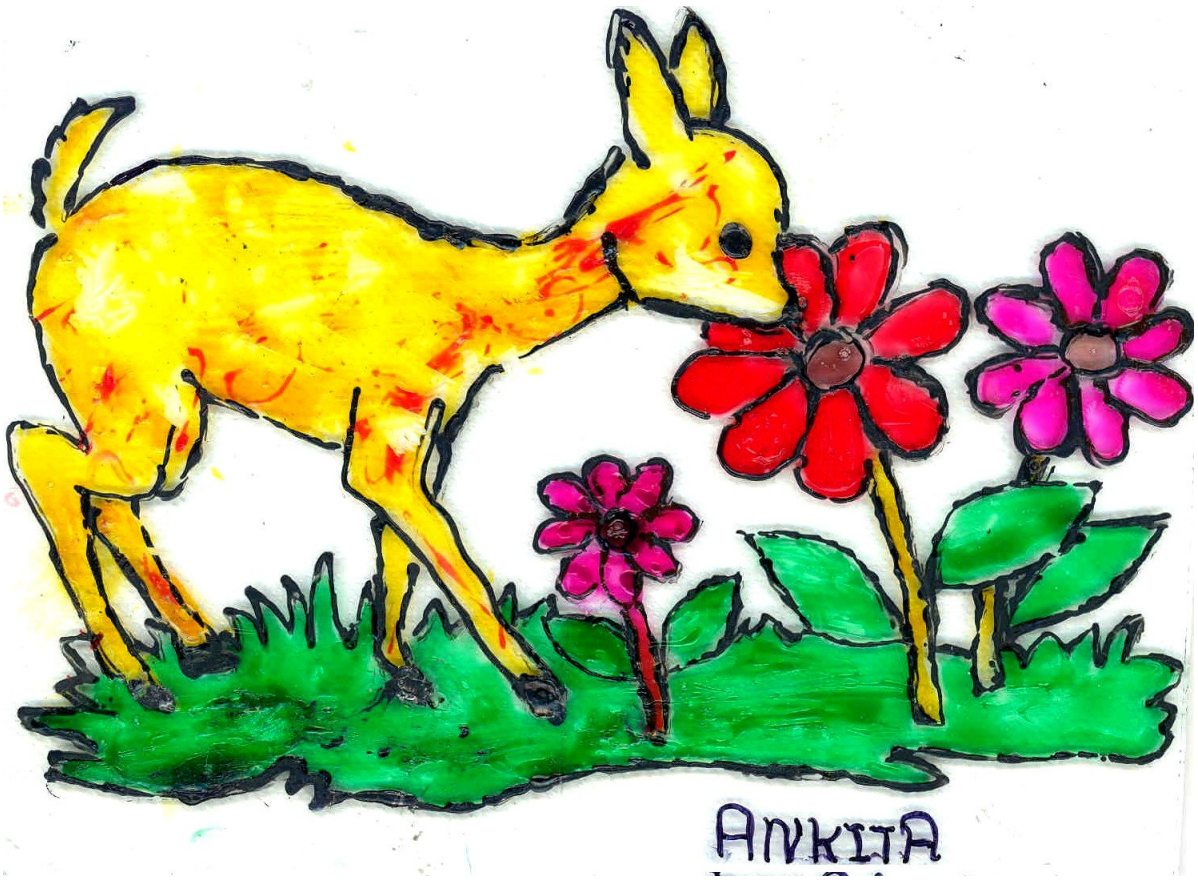
ANKITA

UTKARSH SINGH
V

Name- Niharika Srivastava.

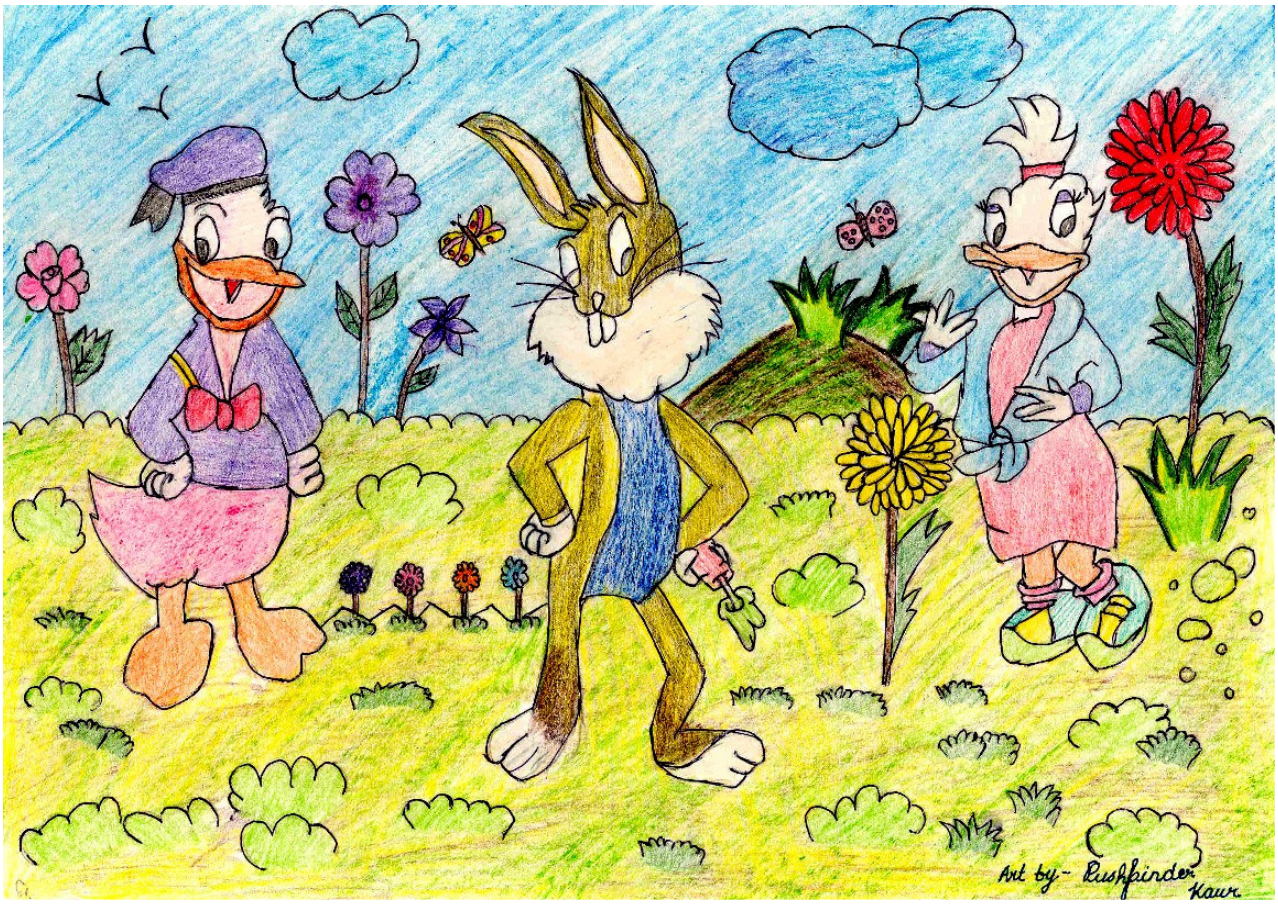
Art by:- Rushpinder Kaur

Ankita Choudhary

Name- Ankit and. Deeksha.

MEGHNA PATI
5yrs,
Sr. K6